दलित-मुस्लिम भाईचारा क्यों और कैसे?

प्रोफे. (डॉ.) रामनाथ

दलित-मुस्लिम भाईचारा क्यों और कैसे?

लेखक

प्रोफे. (डॉ.) रामनाथ

एम.एस.सी. (एजी.), पी. जी. (एन.), पी-एच.डी.

पूर्व कुलपति, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,

कानपुर (उ.प्र.)

सिद्धार्थ बुक्स

दिल्ली

ISBN :978-81-905689-8-2

© लेखक

सिद्धार्थ बुक्स

'चन्दन सदन' सी-263-ए, गली नं.-9,
हरदेवपुरी, शाहदरा, दिल्ली-110093
फोन-22810380, 9810173667

प्रथम संस्करण : 2009

मूल्य : ~~80~~ 75/-

आवरण : सिद्धार्थ बुक्स, चित्रांकन

लेजर एवं टाइपसेटिंग : अनुज कंप्यूटर्स, दिल्ली

बालाजी ऑफसेट, दिल्ली
द्वारा मुद्रित

अनुक्रम

(1) हिन्दू-मुस्लिम दंगे या दलित-मुस्लिम झगड़े? 9

(2) दंगा कराने की नीचतम हरकत की जा सकती है। 9

(3) दलितों व मुसलमानों में खूनी रिश्ता 10

(4) कुरआने पाक क्या कहता है? 11

(5) मनुवादी दंगाइयों के लिए दंगे क्यों लाभदायक? 11

(6) मनुवादी दंगाई भारत को विभाजित करना चाहते हैं 11

(7) मुसलमानों को क्या करना चाहिए? 12

(8) मुसलमानों को क्या नहीं करना चाहिए? 12

(9) दलितों और पिछड़ों को क्या नहीं करना चाहिए? 12

(10) दलितों को क्या करना चाहिए 13

(11) हमारी जड़ें कहाँ हैं? 13

(12) मुसलमान स्पेन के इतिहास से सबक लें 14

(13) दलित-मुस्लिम भाईचारा के तत्त्व 17

(14) मुसलमानों से संबंधित शंकायें और उनका समाधान 19

(अ) मुसलमान विदेशी हैं– 19

(ब) मुसलमान निर्दयी व निष्ठुर होते हैं 19

(स) मुसलमान हर काम हिन्दुओं से उल्टा करते हैं 20

(क) हिन्दू गाय को माता समझकर पूजते हैं तथा मुसलमान उसे खाते हैं 20

(ख) भारत में रहकर पाकिस्तान के गीत गाते हैं 21

(ग) जनसंख्या बढ़ाकर दूसरा पाकिस्तान बनाना चाहते हैं 21

(घ) तलाक ठीक है या जला के मार डालना? 22

(ङ) क्या इस्लाम तलवार के बल पर फैला? 22
(च) गुलामी के प्रमाणों को मिटाया जाना चाहिए 23
(छ) मुस्लिम तुष्टीकरण या सवर्ण तुष्टीकरण? 23
(ज) मुसलमान दूसरों को मारने के लिए जिहाद छेड़ते हैं 23
(झ) मुसलमान हिन्दुओं को काफिर कहते हैं 24
(ञ) आप मुसलमान हैं या भारतीय? 24

दो शब्द

गोरे नस्लवादियों/नाजियों/मनुवादियों/सवर्णों/हिन्दुओं द्वारा भारत में स्पेन का प्रयोग सिर्फ मुसलमानों के लिए ही नहीं दलितों, सिक्खों व ईसाइयों को भी नेस्तनाबूद करने के लिए लागू किया जा रहा है। यह बात हम पिछले 10 साल से कहते आ रहे हैं। जो लाजिमी तौर पर होना था वह 6 दिसम्बर 1992 को हो गया। गांधीवादी हिन्दू राष्ट्र का सपना पूरा हुआ क्योंकि स्पेन के प्रयोग का क्रियान्वयन सन् 1932 से ही लागू हो चुका था, जब गांधी जी की कृपा से रघुपति राघव राजाराम व हे राम की धुन के साथ करपात्री महाराज द्वारा हिन्दू महासभा व गुरुगोलवालकर द्वारा आर. एस. एस. के घोषणा-पत्र जारी किए गए थे, जिनमें कहा गया था कि गैर-हिन्दुओं (गैर सवर्णों) को हिन्दू राष्ट्र में बिना किसी नागरिक अधिकार के तीसरे दर्जे का नागरिक बनकर रहना होगा। इस प्रयोग में सवर्ण नेतृत्व वाले सभी राजनैतिक दलों का परोक्ष रूप से समर्थन है। सिर्फ ऊपर-ऊपर रंग-बिरंगे मुखौटे ओढ़ रखे हैं परन्तु अन्दर से सब एक हैं। इसीलिए दलितों, पिछड़ों के आरक्षण के विरोध में भी ये एक सुर में बोलते हैं। अतः 6 दिसम्बर की घटना अनिवार्य थी जो आज नहीं तो कल अवश्य होती, जल्दी हो गई तो अच्छा है। हम नाजियों का धन्यवाद प्रकट करते हैं लेकिन अब–

1. सन् 1984 में अकाल तख्त और 6 दिसम्बर को बाबरी मस्जिद ध्वस्त करने के बाद अब सवर्ण शासक हमें धोखा नहीं दे सकते और न गुमराह कर सकते। धर्म निरपेक्षता समाजवाद व लोकतंत्र जिनका हमें लालीपॉप दिखाया जा रहा था उनकी हत्या हो गई।
2. सहनशीलता, अहिंसा व विश्व शान्ति नामक लुभावने गांधीवादी झूठे नारों की कलई खुल गई।
3. कानून की हत्या हो गई तथा यह भी पक्का हो गया कि भारत का कानून अंधा नहीं होता, देख-देख कर रेवड़ी बाँटता है। कानून की देवी की आंखों पर बँधी काली पट्टी उतार दी गई।
4. सरकार, प्रशासन, न्यायालय, मनुवादी राजनैतिक दल व उनके नेता, पुलिस, पी.ए.सी., अखबार, दूरदर्शन, आकाशवाणी, कथा, नाटक, सिनेमा–सभी तहे दिल से हिन्दू (सवर्ण) सिद्ध हुए। इससे हमारी आँखें खुलीं।
5. गांधीवादियों ने हिन्दू राष्ट्रवादियों को हिन्दू राष्ट्र बनाने की होड़ में बहुत

पीछे छोड़ दिया। इतने दिनों बाद उनका असली चेहरा खुलकर सामने आया। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है।

6. भारतीय संविधान को छुरा भोंक दिया गया। भारत हिन्दू राष्ट्र हो गया जिसमें दलित आदिवासी व पिछड़े गुलाम व मुस्लिम सिक्ख, ईसाई किरायेदार की हैसियत से रहेंगे।
7. बाबरी मस्जिद ध्वस्त होने के बाद चमचा युग गया। दलित मुस्लिम, सिक्ख व पिछड़ों की युवा पीढ़ी सवर्ण परस्त सत्ता लोभी भ्रष्ट चमचों का चमचावाद मिटा देगी।
8. अछूतों को गुलाम बनाने में मुसलमान सबसे बड़ा रोड़ा थे। अब उन्हें जब सबक सिखा दिया गया है तो नाजी का रुख अब दलितों की ओर होगा। इसलिए दोनों के अस्तित्व के लिए आपसी भाईचारा अनिवार्य होगा।
9. यदि दलितों ने मुसलमानों का और मुसलमानों ने दलितों व पिछड़ों का साथ न दिया तो आजिज आकर दलितों व मुसलमानों को पृथक अपनी मातृभूमि हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। हमारी मातृभूमि भारत हमसे छिनकर विदेशी आर्यों के हाथों में चली जाएगी और यही सवर्ण शासक चाहते भी हैं। हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिए वे एक बार भारत का विभाजन करवा ही चुके हैं।
10. पूरे भारत में दलित मुस्लिम एकता भाईचारे का एक मजबूत प्लेटफार्म बनेगा। इसके अलावा हमारे सामने और कोई दूसरा विकल्प नहीं है।
11. सोया हुआ बेखबर मुसलमान जागेगा। बाबरी मस्जिद के गिरने से भारतीय इतिहास का एक नया अध्याय शुरू होगा। मुस्लिम नेतृत्व पूरी तरह फेल रहा। अब मुसलमानों का नेतृत्व दलितों व मुसलमानों के योंग्य नेताओं के हाथ में होगा।
12. चर्च, गुरुद्वारा व मुसलमानों को अपनी जानकारी या गैर-जानकारी में की गई भारी भूलों पर पुनर्विचार करके उन्हें दूर करना होगा। कहीं ऐसा तो नहीं है कि उन्होंने अपने ही साधनों से सांपों को दूध पिलाकर अपनी बरबादी का सामान जोड़ा हो।
13. बाबरी मस्जिद को गिराने के बाद अब ये मथुरा, वाराणसी व 3000 अन्य मस्जिदों को लेंगे जिनकी उन्होंने लिस्ट बनाई है। संकिसा का बौद्ध तीर्थ स्थल व बोधगया के विश्वविख्यात बौद्ध मन्दिर पर नाजियों ने पहले ही कब्जा कर रखा है। इस योजना में भारतीय नाजियों ने गोरे नस्लवादियों से हाथ मिलाया है। अब गृह युद्ध की शुरुआत है जिसे दलितों व मुसलमानों को मिलकर व भाईचारा बनाकर जीतना ही होगा।

14. अब लखनऊ के महामहिम अलीमियां साहेब व उनके नागपुर के शिष्य मौलाना अब्दुल करीम पारिख को दलित मुस्लिम भाईचारे की मशाल लेकर हमारे सिर पर हाथ रखना ही होगा, वर्ना जो तटस्थ है समय लिखेगा उनका भी इतिहास।

इस पुस्तिका के शीर्षक **'दलित मुस्लिम भाईचारा...'** का उद्देश्य यह कदापि नहीं है कि सिक्खों, ईसाइयों, जैनों, बौद्धों व पार्सियों में भाईचारा कायम न किया जाए तथा अन्य वर्गों से दुश्मनी पैदा की जाए। यह शीर्षक मात्र इसीलिए रखा गया है क्योंकि आज तक के दंगों के इतिहास में दलितों व मुसलमानों की ही लाचारी व अज्ञानता का फायदा उठाकर उन्हें आपस में लड़वाया गया है। जोंक वहीं लगती है जहाँ खून होता। दलितों व मुसलमानों का खून समाप्त हो चुका है। इसीलिए उन्हें आपस में लड़वाकर देश पर निर्बाध रूप से शासन किया जा सकता है। जब सिक्खों व ईसाइयों को भी ऐनेमिक बना दिया जाएगा तभी उनमें दंगा करवाने का नम्बर आएगा। यही दंगों का मूल दर्शन है।

यह पुस्तिका इस आशा के साथ हिन्दी में जारी की जा रही है कि इसे अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद करके भारत के प्रत्येक दलित, मुस्लिम, आदिवासी, पिछड़े, सिक्ख, ईसाई व बौद्ध के हाथ में पहुँचा दी जाए। यह एक छोटी-सी पुस्तिका है। परन्तु बकौल किसी शायर के कि–

इक मौज अगर चाहे तो तूफान बन जाए
इक फूल अगर चाहे तो गुलिस्तान बन जाए
इक खून के कतरे में तासीर है इतनी
कि कौम की किस्मत का उन्वान बन जाए

इस उम्मीद के साथ कि यह पुस्तिका बहुजन समाज व पूरे भारत की किस्मत का शीर्षक बने, सभी पाठकों को जय भीम, जय भारत का अभिवादन करता हूँ।

कानपुर,
सितम्बर, 1993

–रामनाथ

(1) हिन्दू-मुस्लिम दंगे या दलित-मुस्लिम झगड़े?

भारत की एकता, अखण्डता और साम्प्रदायिक सौहार्द के हित में दलितों और मुसलमानों को यह बात साफ तौर पर समझ लेनी चाहिए कि राजनीति में धर्म का नारा लगाने वाली साम्प्रदायिक ताकतों की पूरी ताकत इसी में है कि हम दलित और मुसलमान आपस में लड़ते रहें तथा हमारी ताकत इसी में है कि हम आपस में न लड़ें बल्कि इसको यों कहें तो ज्यादा बेहतर होगा कि जिस प्रकार मछली के प्राण पानी में बसते हैं उसी प्रकार इन ताकतों के प्राण दंगों में बसते हैं। यदि हम दंगा रूपी पानी सुखा दें तो दंगाइयों का जिन्दा रहना दुश्वार हो जाएगा। इसीलिए दंगावादी ताकतों को ठंडा करने का इससे सस्ता और कारगर उपाय क्या हो सकता है कि दलित-मुस्लिम भाई आपस में न लड़ें। अर्थात् दलित, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, जैन सब भाई-भाई।

जिसको हिन्दू-मुस्लिम दंगा कहा जा रहा है वे दलित-मुस्लिम झगड़े हैं। भारत में एक भी हिन्दू-मुस्लिम दंगा नहीं हुआ यदि ऐसा होता तो हिन्दुओं (सवर्णों) का नुकसान अवश्य होता। हर दंगे में सिर्फ दलितों, पिछड़ों और मुसलमानों को भारी जानमाल का नुकसान हुआ। हमें बँधी रोटी, बँधा शोरवा तक ही सीमित रखने के इरादे से दंगे कराये जाते हैं।

(2) दंगा कराने की नीचतम हरकत की जा सकती है।

हम अच्छी तरह समझ लें कि गाय को माता कहने वाले ही गाय को मारकर आपके सामने फेंक देंगे और ऐसा हुआ भी है। कहीं-कहीं तो मनुवादी दरोगाओं ने स्वयं गाय को गोली से मारकर मुसलमानों का नाम रख दिया। जिस मन्दिर पर राजनैतिक रोटियाँ सेंकी जा रही हैं उसी मन्दिर को दलित-मुस्लिम आबादी में ये साम्प्रदायिक ताकतें स्वयं तोड़कर हिन्दू धर्म खतरे में है—का नारा लगाएँगी। ये ताकतें झूठी अफवाहें फैलाने में माहिर हैं। अभी हाल के दंगों में बड़े जोर की अफवाह फैलाई गई कि फलां यादव नेता को गोली मार दी गई, दलितों को फलां जगह मुसलमानों ने मार डाला या फलां यादव को उसकी दुकान समेत जला दिया गया। आप समझे कि इन अफवाहों को फैलाने वाला कोई यादव, कुर्मी या दलित हरगिज नहीं होगा। दंगा विशेषज्ञ मनुवादी आपको भड़काकर आपकी भीड़ जुटाकर घटनास्थल से गायब हो जाते हैं। गोली चलने पर हमारी ही जन हानि, धन हानि होती है।

दंगाई मुट्ठी भर होते हैं, उनका सभी लोग मिलकर मुकाबला करें। दंगाइयों का हथियार अफवाहें होती हैं। पुलिस व पी. ए. सी. वालों से कहेंगे कि इतने

पी. ए. सी. जवान मुसलमानों ने मार दिए। मुसलमानों से कहेंगे कि पी. ए. सी. ने इतने मुसलमानों को मार दिया। पैगम्बर साहेब को अपमानित करने की भी हरकत की जा सकती है। सुअर को मस्जिद में हाँक दिया जाएगा। मस्जिद में जय श्रीराम या ओम लिखवा दिया जाएगा। आपकी भावनाओं को भड़काने व उकसाने की हर सम्भव कोशिश की जाएगी। आप इसको मानकर चलिए कि इस प्रकार की नीचतम हरकतें जरूर होंगी। अभी हमारे पास इंस्टीट्यूट आफ ऑब्जेक्टिव स्टडीज दिल्ली के चेयरमैन डॉ. मोहम्मद मन्जूर आलम ने नए साल के पैगाम नामक शीर्षक से एक बहुत खूबसूरत कार्ड भेजा है जिसमें कुराने पाक के जानिब से लिखा गया है कि–

किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इतना उत्तेजित न कर दे कि न्याय से फिर जाओ। न्याय करो, यह ईश्वर परायणता के अनुकूल है।

–कुरआन

इसी में दलितों (20%), आदिवासियों (10%), पिछड़ों (35%), मुसलमानों (15%), ईसाइयों (2.5%), सिक्खों (2%), बौद्धों (0.5%) और हिन्दुओं (15%), का हित निहित है। जिस प्रकार चिराग गुल होने के पहले अपनी रोशनी बढ़ा देता है उसी प्रकार दंगा संस्कृति का दीपक बुझने वाला है। मेहरबानी करके दलित-मुस्लिम भाई आपस में लड़कर दंगा संस्कृति के दीपक में तेल न भरें।

(3) दलितों व मुसलमानों में खूनी रिश्ता

पूरी दुनिया में मुसलमान सऊदी अरब से नहीं भेजे गये। जहाँ जालिमों ने मजलूमों पर जुल्म किए वहीं पर कुराने-पाक के हुक्म के मुताबिक इस्लाम ने जालिमों को शिकस्त देकर मजलूमों की दिफा की तथा गुलामी की जंजीरें तोड़कर इन्सानियत की बहाली की। भारत में शत-प्रतिशत मजलूमों ने इस्लाम कबूल किया। दलितों के अलावा भला और कौन मजलूम हो सकता है? जालिम भला इस्लाम कबूल क्यों करेगा। किया तो चन्द चमचों ने बादशाह सलामत की बगल में कुर्सी पर बैठने व मजलूम धर्मान्तरितों पर शासन करने की खातिर। और वह भी जब मलिक काफूर (धर्मान्तरण के पहले चमार) व नासिरुद्दीन खुसरों (धर्मान्तरण के पूर्व वाल्मीकि) को अलाउद्दीन खिलजी के समय में क्रमशः दक्षिण व दिल्ली का सुल्तान बनाया गया। अतः जितनी जल्दी दलित भाई यह तहेदिल से स्वीकार कर लेंगे कि भारतीय खण्ड के मुसलमानों की रगों में उन्हीं का खून बह रहा है उतनी ही जल्दी दंगा संस्कृति द्वारा उनका कत्लेआम आगजनी व उत्पीड़न रोकने में कामयाबी मिलेगी। अछूत, ईसाई व सिक्ख तभी तक सुरक्षित हैं जब तक मुसलमान सुरक्षित हैं। अतः हम सभी मिलकर भाईचारा बनाएँ।

(4) कुरआने पाक क्या कहता है?

कुरआने पाक का कहना है कि मजलूमों की जालिमों से दिफा करना फर्ज है हर मुसलमान का। लेकिन भारत के मुसलमानों ने इस फर्ज को अदा नहीं किया। इस्लाम ने किया परन्तु उसके बन्दों ने नहीं। मुस्लिम शासकों ने हमेशा जालिमों का साथ दिया, उन्हें मालामाल किया। अल्लामा इकबाल ने खूब कहा कि—सितबते तौहीद कायम जिन नमाजों से हुई वो नमाजें हिन्द में नजरे ब्रह्मन हो गईं? आजादी के बाद भी सवर्ण-परस्त मुसलमान चमचे मुस्लिम आवाम को सवर्णों के राजनैतिक दलों को वोट बैंक बनाए रहे। आज जब मुसलमानों को ही मजलूम की हालत में ला दिया गया है तो वे मजलूमों की जालिमों से कैसे रक्षा करेंगे? परन्तु क्या मजलूम-मजलूम मिलकर जालिम को शिकस्त नहीं दे सकते? बकौल फैज अहमद फैज के जरूर दे सकते हैं :

यह मजलूम मखलूक गर सर उठाए
तो इन्सान सब सरकशी भूल जाएँ
ये चाहें तो दुनिया को अपना बना लें
ये आकाओं की हड्डियाँ तक चबा लें

(5) मनुवादी दंगाइयों के लिए दंगे क्यों लाभदायक?

दंगा नामक तीर से कई शिकार किए जा रहे हैं। दंगों में शत-प्रतिशत भारत के मूल निवासी दलित शोषित व मुस्लिम मारे जाते हैं जिनको आर्य हिन्दू अपना दुश्मन समझते हैं क्योंकि वे हिन्दू राष्ट्र बनने में कठिनाई पैदा कर रहे हैं। पन्द्रह प्रतिशत सवर्णों द्वारा हथियायी देश की 90% धन-दौलत तभी तक सुरक्षित रह सकती है जब तक दलित-मुस्लिम आपस में लड़ते रहें। मुसलमानों व ईसाइयों का बनावटी डर दिखाकर ही दलितों व पिछड़ों की मदद से शासन किया जा सकता है। दंगों के जरिये ही दलितों व मुसलमानों को आर्थिक व सामाजिक तौर पर लँगड़ा बनाकर सवर्णों के रहमो-करम पर रखा जा सकता है। एक और खतरा दलितों और मुसलमानों के लिए पैदा किया जा रहा है। ब्राह्मणवादी शासक नई आर्थिक व्यवस्था के बहाने गौर नस्लवादियों व हिटलरवादियों को व्यापार के बहाने निमंत्रण दे रहे हैं। लेकिन मुस्लिम व दलित इस शैतान से बेखबर हैं। हमें देश की शासन सत्ता पर कब्जा करके नाजीवादियों के इन मन्सूबों को नाकाम करना चाहिए।

(6) मनुवादी दंगाई भारत को विभाजित करना चाहते हैं

जब हमारे 85% भाई एक होंगे तो भारत की एकता को बल मिलेगा। जब 85% समाज खुशहाल होगा तब देश भी खुशहाल होगा, जब 85% में अमन चैन होगा

तो देश में भी अमन चैन रहेगा। जो लोग इस एकता को दंगों द्वारा नष्ट करना चाहते हैं वे अपने हिन्दू एकता के झूठे प्रोपेगण्डा द्वारा भारतीय एकता को नष्ट करना चाहते हैं। दूसरे शब्दों में, हिन्दू एकता भारतीय एकता की विरोधी है। इस प्रकार दलित-मुस्लिम एकता व भाईचारा एक पवित्र अवधारणा है।

(7) मुसलमानों को क्या करना चाहिए?

दलित-मुस्लिम भाईचारा कायम करने के लिए मुसलमान बड़े धूमधाम से डॉ. अम्बेडकर जयन्ती, रैदास जयन्ती, वाल्मीकि जयन्ती व उनकी शोभा यात्राओं व झाँकियों में शामिल हो, शरबत बाँटें सहभोज करें व मुबारकबाद दें। मनुवादियों द्वारा गुमराह अपने बिछुड़े भाइयों का दिल जीतें, निर्धन दलित भाइयों की बच्चियों की शादी में थोड़ा आर्थिक सहयोग करें तथा उनके सुख-दुःख में शामिल हों। शुरू में कठिनाई होगी बाद में सब ठीक हो जाएगा क्योंकि दलित दो मीठे बोलो और सम्मान के भूखे हैं जो उन्हें मनुवादी व्यवस्था में सैकड़ों वर्षों से नहीं मिला।

(8) मुसलमानों को क्या नहीं करना चाहिए?

मुसलमान अपने को अल्पसंख्यक कहना बंद करें। इससे हीनता का बोध होता है। इसमें सवर्णों की चाल है। साढ़े तीन प्रतिशत विप्र देवता बहुसंख्यक और पन्द्रह प्रतिशत मुसलमान अल्पसंख्यक—यह कौन-सा गणित है? एक सभा में एक मौलवी साहब कह रहे थे कि हमें यहाँ आए एक हजार वर्ष हो गए। क्या पूरी दुनिया में मुसलमान सऊदी अरब से पहुँचे? हम भारत के मूल निवासी हैं। हमारा देश हमारा है। हम भारत के सभी नागरिकों में भाईचारा व अमन चैन चाहते हैं। एक भयंकर गलती मुसलमान और कर रहे हैं, वे दलितों व आदिवासियों को भी हिन्दू कहते हैं। दलितों ने अपने को हिन्दू कहना बन्द कर दिया है। मनुवादी स्वयं उन्हें हिन्दू नहीं मानते। इन्हें हिन्दू कहकर आप हिन्दुओं की 15% आबादी में बढ़ोत्तरी करते हैं।

(9) दलितों और पिछड़ों को क्या नहीं करना चाहिए?

उन्हें अविलम्ब अपने को शूद्र व हिन्दू कहना बन्द कर देना चाहिए। इस बात की बाबा साहब अम्बेडकर, पेरियार व ज्योतिराव फूले भली प्रकार सिद्ध कर चुके हैं। पन्द्रह प्रतिशत सवर्णों का कोड वर्ड हिन्दू है। यदि दलित हिन्दू हैं तो उन्हें मन्दिरों में प्रवेश क्यों नहीं करने दिया जाता? यदि अछूत हिन्दू हैं तो कुल बलात्कारों के 90% केस दलितों की महिलाओं के साथ क्यों होते हैं? मुसलमानों ने दलितों पर कोई अत्याचार नहीं किए बल्कि पूरे भारत की झुग्गी-झोपड़ियों व गाँवों में दोनों बड़ी आत्मीयता से रहते हैं। मन्दिर बनाते समय अछूत हिन्दू हो

जाते हैं तथा मन्दिर में प्रवेश व आरक्षण के मुद्दे पर दुश्मन। ऐसा क्यों? जगजीवन राम द्वारा छुई हुई सम्पूर्णानन्द की मूर्ति का शुद्धिकरण गंगाजल से क्यों किया गया? यदि आदिवासी हिन्दू हैं तो आदिवासी वीर एकलव्य का अंगूठा काटने वाले गुरु द्रोणाचार्य के नाम से खेलों का पुरस्कार क्यों दिया जा रहा है? यदि शूद्र हिन्दू हैं तो राम ने शूद्र ऋषि शम्बूक की हत्या क्यों की? यदि आदिवासी हिन्दू हैं तो हिन्दू उनके झारखण्ड प्रदेश का विरोध क्यों करते हैं? हरियाणा व हिमाचल प्रदेश का विरोध क्यों नहीं हुआ? यदि पिछड़ी जातियाँ हिन्दू हैं तो सवर्ण हिन्दू उनकी मंडल रिपोर्ट का विरोध क्यों करते हैं? यदि पिछड़े हिन्दू हैं तो सवर्ण उनके घर का कच्चा खाना क्यों नहीं खाते तथा उनके घड़े का पानी क्यों नहीं पीते?

(10) दलितों को क्या करना चाहिए

दलितों को मोहम्मद साहब का जन्म-दिवस मनाना चाहिए। ईद के मुबारक मौके पर ईद मिलन समारोह आयोजित करने चाहिए तथा बड़ी संख्या में शामिल होना चाहिए। तमिलनाडु में मगरिब की नमाज के बाद दलित और मुस्लिम मस्जिद में बैठकर आपसी भाईचारा सम्बन्धी विचार-विमर्श करते हैं। ऐसा अन्य प्रदेशों में भी होना चाहिए। मुसलमानों, सिक्खों और ईसाइयों को अपने प्राइवेट संस्थानों व कारखानों में दलितों को अच्छा प्रतिनिधित्व देना चाहिए। दलितों को उर्दू सीखनी चाहिए। उन्हें अम्बेडकर जयन्ती, बुद्ध जयन्ती, रैदास जयन्ती व वाल्मीकि जयन्ती को अपना धार्मिक त्यौहार समझकर उन्हें धूमधाम से मनाना चाहिए। बौद्ध रीति से शादियाँ करनी चाहिए तथा मनुवादी त्यौहारों का बहिष्कार करना चाहिए। बाबा साहेब अम्बेडकर की 22 प्रतिज्ञाओं पर अमल करना चाहिए।

(11) हमारी जड़ें कहाँ हैं?

भारतभूमि भारत के निवासियों की है। जब ईसा के ढाई हजार साल पहले हमने यहाँ दुनिया की सर्वोच्च सिन्धु घाटी सभ्यता का निर्माण किया तो उसके एक हजार साल बाद इस भूमि में भूखे, नंगे, असहाय व अशिक्षित आर्यों का आगमन हुआ हमने इन्हें सहानुभूति, सम्मान व समानता दी। फिर इसी सभ्यता को विदेशी आर्यों ने छल-कपट, प्रपंच, पाखंड, द्वेष से देवासुर संग्राम से नेस्तनाबूद करने का षड्यंत्र रचा। फिर हमारे मौर्य (काछ, कोइरी, माली) सम्राटों ने इस देश के इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ लिखे। तब भी हमने श्रमणों और ब्राह्मणों दोनों का सम्मान किया। परन्तु ई. पू. 187 से ई. पू. 15 तक शुंग ब्राह्मणों ने फिर वही मारकाट, शूद्र उत्पीड़न, तोड़-फोड़, बौद्धों का कत्लेआम का खेल खेला। ई. पू. 15 से 130 ई. तक बौद्ध

शकों ने शुंगों द्वारा फैलाई अमानवीयता व वर्ग व्यवस्था के जहर को समाप्त कर के मानववाद की नींव रखी।

ई. सं. 240 से 569 तक लुहार, बढ़ई, कुम्हार, कोरी, गड़रिय आदि दस्तकारों ने भारत का गुप्तकाल का स्वर्ण युग बनाया। इस स्वर्णयुग में भी हमने सवर्णों को पूरा सम्मान दिया। परन्तु सातवीं सदी में आदि शंकरा ने क्षत्रिय राजाओं की मदद से बौद्धों का कत्लेआम किया तथा विश्वविद्यालयों और बौद्ध मन्दिरों को ध्वस्त करके देव मन्दिरों व मठों का निर्माण किया। मुगल बादशाहों खासकर बाबर और अकबर ने हिन्दू मन्दिरों व ब्राह्मणों को सोना, चांदी व बड़ी-बड़ी जागीरें देकर जालिमों का साथ दिया जिसका नतीजा यह निकला कि 1680 से 1818 तक पेशवा ब्राह्मणों ने मनुवादी हिटलरशाही द्वारा अछूतों का दमन व उत्पीड़न किया। इस तारीखी दास्तान से साफ जाहिर है कि भारतीय खंड में इस्लाम के आगमन के पूर्व आज के मुसलमानों, दलितों, आदिवासियों व पिछड़ों ने ही भारतीय इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ लिखे।

(12) मुसलमान स्पेन के इतिहास से सबक लें

स्पेन में 712 से 1292 ई. तक मुसलमानों ने राज किया। परन्तु भारत में मुसलमानों ने एक हजार वर्ष तक राज किया। बारहवीं सदी में जब पूरी दुनिया में इस्लाम का परचम लहरा रहा था तो इस्लाम स्पेन से अलविदा करने की तैयारी कर रहा था। ऐसा क्यों? मोहम्मद अली जिन्ना जब स्पेन गए तो बहुत कोशिश करने पर उनके सामने तीन मुसलमान हाजिर किए गए जो कहीं सड़क पर झाड़ू लगा रहे थे। दूसरे इस्लामिक देश स्पेन से इस्लाम को क्यों नहीं बचा पाए? मुसलमानों ने स्पेन के इतिहास से सबक नहीं लिया। परन्तु भारतीय मनुवादियों ने भारत से इस्लाम को मिटाने की मुहिम सन् 1932 से चला रखी है।

सन् 1932 में गांधी एण्ड कम्पनी की शह पर हिन्दू महासभा व आर. एस. एस. ने अपने घोषणा-पत्र में जारी किया था कि हिन्दुस्तान केवल हिन्दुओं की भूमि है। भारतीय मुसलमान, ईसाई व अन्य वर्ग यहाँ मेहमान के रूप में ही रह सकते हैं। उर्दू एक विदेशी भाषा है जो हमारी गुलामी का जीता-जागता प्रमाण है इसे जड़ से उखाड़ फेंकना है। गैर-हिन्दुओं को हिन्दू संस्कृति को अपनाना होगा। हिन्दू संस्कृति व हिन्दू राष्ट्र के अलावा अन्य विचारधाराओं को भूलना होगा। नहीं तो वे हिन्दू राष्ट्र में बिना किसी नागरिक अधिकार के रह सकते हैं।

स्पेन में तीन प्रकार के मुसलमान थे–

(1) अरबों की मूल सन्तानें।

(2) अरब पिता और स्पेन माता की सन्तानें।

(3) ईसाई जिन्होंने इस्लाम कबूल कर लिया था।

आप देखें कि स्पेन से व भारत से इस्लाम को मिटाने की रणनीति में कहाँ तक समानता है? मेरा मानना है कि स्पेन की रणनीति भारत में भी अपनाई जा रही है–

(1) जब इस्लामिक स्पेन के गढ़ ग्रेनाडा का 1492 में पतन हुआ तो अरब के मूल निवासियों को अपनी स्पेन की सम्पत्ति छोड़कर जान बचाकर ट्यूनीशिया व मोरक्को जाना पड़ा। स्पेन में अरब के जिन मूल निवासियों ने स्पेन में रहने का विकल्प दिया उन पर भारत की तरह विदेशी स्पेन द्रोही का लेबल चस्पां कर दिया गया। बाकी अन्य मुसलमानों जिन्होंने स्पेन में रहने का विकल्प दिया, उनको स्पेन के सम्राट ने पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता की गारन्टी दी। भारत में भी गांधियों व नेहरूओं ने हमेशा मुसलमानों को पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता की सिर्फ गारन्टी दी, परन्तु किया ठीक इसके उल्टा।

(2) स्पेन में योजनाबद्ध ढंग से 50 साल तक मुसलमानों पर जातीय दंगे थोपे गए। भारत में यह कार्य हाफ पेंटियों को सौंपा गया। गांधीवादी दूध के धुले बने रहे।

(3) स्पेन में प्रशासन से अरबी भाषा को हटा दिया गया था। अरब में भी सन् 1950 में उर्दू को हटा दिया गया।

(4) मस्जिदों के अन्दर चलने वाले मदरसों में गणित, विज्ञान व दर्शन पर रोक लगाकर उन्हें मजहबी शिक्षा तक ही सीमित रहने दिया। अरब में भी अलीगढ़, जामिया मिलिया व उस्मानियां विश्वविद्यालयों का विरोध मुसलमानों द्वारा कराया गया। इससे साइंस व टैक्नोलॉजी के क्षेत्रों में मुसलमानों की भागीदारी समाप्त हो गई।

(5) स्पेन में इतिहास की किताबों में दर्शाया गया कि मुसलमान हमलावर, क्रूर व निष्ठुर होते हैं। गांधी ने स्वयं मुसलमानों को क्रूर व निष्ठुर कहा। भारत का पूरा इतिहास मुस्लिम व दलित विरोधी लिखा गया।

(6) स्पेन की तरह भारत में भी मुसलमानों को निहत्था रखने के लिए कई प्रकार के बहाने बनाकर उनके घरों की तलाशी ली गई और उनकी आत्मरक्षा के हथियारों को जब्त कर लिया जाता है। लेकिन सबसे ज्यादा हथियार सवर्णों के यहाँ जमा हैं।

(7) जिस प्रकार स्पेन में मुसलमानों को विदेशी गद्दार व स्पेन तोड़क बताया गया उसी प्रकार अरब में भी इसका जमकर प्रचार किया जाता है। परन्तु देशद्रोह, गद्दारी व विदेशों में धन जमा करने वालों में सवर्ण ही पकड़े गए।

(8) स्पेन में धर्मान्तरित मुसलमानों को दुबारा ईसाई बनने को यह कहकर फुसलाया गया कि उनके पूर्वजों को तलवार के बल पर मुसलमान बनाया गया था। भारत में ऐसा इसलिए नहीं हो पा रहा है क्योंकि हिन्दू सिर्फ माता के पेट से ही बनकर आता है, धर्मान्तरण से नहीं।

(9) स्पेन में अरब और स्पेन माता-पिता की सन्तानों को अवैध घोषित कर दिया गया। भारत में ऐसा नहीं है क्योंकि भारतीय खण्ड के मुसलमान मूल भारतीय द्रविड़ों और अनार्यों से धर्मान्तरित हैं।

(10) इस्लामिक विधि से की जाने वाली शादियों को अदालत में भी पंजीकृत कराने के आदेश दिए गए। मुस्लिम पर्सनल लॉ को गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया। भारत में भी शाहबानो का केस उछालकर संविधान की धारा 148 के अन्तर्गत मुस्लिम पर्सनल लॉ को समाप्त करके सामान्य कानून बनाने का अभियान चलाया जा रहा है।

(11) स्पेन के मुसलमानों ने अपनी शुरू की दो पीढ़ियों तक अपनी संस्कृति को बचाने के लिए अपने बच्चों को घरों व मस्जिदों में मज़हबी तालीम दी। अदालती शादियों के साथ निकाह भी होते रहे किन्तु बाद में सिर्फ अदालती शादियों का प्रचलन हो गया।

(12) स्पेन के सम्भ्रान्त मुसलमान स्पेन छोड़कर टर्की, ट्यूनीसिया, मोरक्को व मिश्र चले गए। आम मुस्लिम आवास स्पेन में ही छूट गए। भारत में भी अलीगढ़ जामिया मिलिया व उस्मानिया से निकले वैज्ञानिक नौकरी न मिलने के कारण विदेशों को पलायन कर गए और आज भी कर रहे हैं।

(13) स्पेन की तरह भारत में भी मुसलमानों का कोई धार्मिक व राजनैतिक नेता नहीं हुआ जिसे वे अपना कह सकें। जानकारी या गैर-जानकारी में मुसलमानों का नेतृत्व मनुवादियों की साजिशों का शिकार होता चला आ रहा है। मुसलमानों, दलितों, पिछड़ों व सिक्खों को अपने समाज के सवर्ण परस्त विश्वासघाती व सत्ता लोभी चमचों का तीव्र विरोध व सामाजिक बहिष्कार करना चाहिए।

(14) स्पेन में जिन मुसलमानों ने टर्की व मिश्र से मदद की गुहार लगाई उसे स्पेन का अन्दरूनी मामला बताकर उनकी निन्दा की गई। बाहर के देशों ने मदद करने से इसलिए मना कर दिया कि इससे स्पेन में मुसलमानों पर और अधिक जुल्म बढ़ जाएँगे। रोजी-रोटी न मिलने के कारण इस्लाम के धर्मगुरुओं ने स्पेन छोड़ दिया। निरीह लाचार अवाम स्पेन में रह गए तथा अपनी संस्कृति को छोड़कर स्पेन की मुख्यधारा में शामिल हो गए। इस प्रकार सन् 1632 में इस्लाम ने स्पेन को अलविदा कहा।

जिस प्रकार स्पेन से इस्लाम मिटाया गया तथा भारत में मिटाने की रणनीति जारी है उसी प्रकार भारत से भारत का बौद्ध धर्म पुष्यमित्र शुंग व आदि शंकराचार्य ब्राह्मणों द्वारा मिटाया गया था।

भारत में मुसलमानों की तबाही हुकूकुल अल्लाह अर्थात् नमाज, रोजा व ध्यान की तरफ कम ध्यान देने के कारण नहीं है। बल्कि हुकूकुल इबाद में आदेशित

फर्ज को अदा न करने के कारण है। हुकूकुल इबाद में इस बात पर खासतौर से जोर दिया गया है कि मजलूमों और जालिमों को सही पहचान करके मजलूमों की मुक्ति हेतु जालिमों को करारी शिकस्त दी जाए, चाहे जालिम मुसलमान ही क्यों न हों। परन्तु जालिमों को शिकस्त देना तो दूर भारतीय मुसलमानों ने हमेशा जालिमों का साथ दिया। हुकूकुल अल्लाह में तो एक मुसलमान व्यक्तिगत तौर पर अल्लाह के सामने जवाबदेह होगा। परन्तु हुकूकुल इबाद के उल्लंघन से तो करोड़ों-करोड़ इन्सानों के प्रति जवाबदेह होना पड़ेगा। पूरा जोर मुसलमानों को ईश्वर से जोड़ने पर दिया गया, मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने का कम। अतः अब भी वक्त है कि भारतीय मुसलमान हजारों साल से गुलाम व मजलूम बनाए गए दलितों का बिला शर्त साथ देकर उनसे भाईचारा कायम करें।

(13) दलित-मुस्लिम भाईचारा के तत्त्व

(1) दोनों एक ही माहौल और क्षेत्र में सदियों से रह रहे हैं। सवर्णों और मुसलमानों को या दलितों और सवर्णों को एक माहौल में बड़ी संख्या में रहते नहीं देखा गया। पूरे भारत के गाँवों व कस्बों में अछूतों की बस्तियाँ गाँव के बाहर मिलेंगी।

(2) उन कपड़ा कारखानों (बिनता विभाग) जिनमें सवर्ण मजदूर काम करते थे, में मुस्लिम व अछूतों की भर्ती पर रोक थी क्योंकि एक ही धागे को दाँतों से काटना पड़ता था। परन्तु मुस्लिम जुलाहों के कारखानों में अछूतों व मुस्लिम मजदूर कार्य करते थे उनमें सवर्ण मजदूर काम करने से इनकार कर देते थे। इन कारखानों में मुसलमान व अछूत मजदूरों को एक ही धागे को दाँत से काटने में कोई आपत्ति नहीं हुई।

(3) दोनों मूल भारतीय हैं (लेखक की पुस्तक—भारत में विदेशी और गद्दार कौन को पढ़ें)।

(4) दोनों का शत्रु एक है। सवर्ण ही अछूतों का नरसंहार, महिलाओं का बलात्कार व उनकी मामूली सम्पत्ति व घरों को जलाते हैं। यह सिलसिला पूरे भारत में सालों चलता है। मुसलमानों पर हमला व बलवे कौन करवाता है—यह सभी जानते हैं। कश्मीर में मुसलमानों द्वारा अछूतों को अछूत समझकर एक भी हत्या नहीं हुई। इस प्रकार मनुवादियों के दोनों दुश्मन आपस में दोस्त और भाई हुए।

(5) दोनों की समस्यायें आर्थिक न होकर सामाजिक व सांस्कृतिक हैं।

(6) दोनों ही गैर-हिन्दू हैं। स्वयं शंकराचार्य ने दलितों को हिन्दू नहीं माना। गैर हिन्दुओं को ही म्लेच्छ कहा जाता है।

(7) दोनों ही शाकाहार का ढोंग नहीं करते। कानपुर में तथाकथित शाकाहारियों को भैंसे की बिरियानी खाते देखा गया है। हिन्दू धर्म ग्रन्थों में 35 प्रकार

के जानवरों का मांस श्राद्ध में परोसने का विधान है जिसमें भैंसा और गाय भी है। दलितों व मुसलमानों को शारीरिक तौर पर कमजोर बनाए रखने के लिए गाय को माता कहा गया है तथा शाकाहार का ढोंग रचा गया है।

(8) दलित-मुस्लिम भाईचारे पर आधारित कई संगठन बनाए गए और सफल भी हुए जैसे गुजरात में खेम, दलित-मुस्लिम सुरक्षा महासंघ, बामसेफ, डी-एस फोर, बहुजन समाज पार्टी।

(9) दोनों के यहाँ महिलाओं का सम्मान है। दहेज लोभ से बहुएँ नहीं जलाई जातीं तथा विधवा विवाह व तलाक में कोई दिक्कत नहीं है।

(10) लेखक को उसकी 30 साल की सरकारी नौकरी में सवर्णों ने छुआछूत के कारण ज्यादा किराया देने पर भी अपने मकान किराये पर नहीं दिए सिर्फ मुसलमानों, सिक्खों व जैनों ने ही दिए। यही बर्ताव आज भी सवर्ण लोग अछूत कर्मचारियों के साथ करते हैं।

(11) अछूत मस्जिदों, गिरजाघरों व गुरुद्वारों में बेरोक-टोक प्रवेश कर सकते हैं परन्तु मंदिर में नहीं।

(12) दोनों का मस्तिष्क मान व नासिकामान (सिफेलिक और नेसल इन्डेक्स) समान है जबकि आर्यों के ये दोनों मान अधिसंख्यक दलितों व मुसलमानों से भिन्न हैं।

(13) दोनों अपने मुर्दों को दफनाते हैं जबकि सवर्ण हिंदू जलाकर प्रदूषण फैलाते हैं।

(14) 6 दिसम्बर 1956 को बाबा साहेब अम्बेडकर की हत्या हुई थी। इसीलिए यह दिन बहुजन समाज के लिए शोक दिवस था। मनुवादी दंगाइयों ने जानबूझ कर इसी दिन बाबरी मस्जिद को शहीद करके 6 दिसम्बर को अपना विजय दिवस घोषित किया। इस प्रकार हमारे प्रबल विरोधी तक ने हमें आपस में भाई माना है। अब 6 दिसम्बर को हम महाशोक दिवस या महाकाला दिवस के रूप में मनायेंगे।

(15) दलितों का यदि कोई धर्म है तो वह बौद्ध धर्म है। बौद्धों में पंचशील व अस्टांगिक मार्ग में सिद्धांत इस्लाम के सिद्धान्तों से अक्षरशः मिलते-जुलते हैं तथा इस्लाम में बुद्ध की स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व भाव का पूरा प्रभाव है। जैसे पैगम्बर साहेब के शराब से दूर रहने, चोरी न करने, चुगली न करने, व्यभिचार न करने, संगीत और नृत्य से दूर रहने, आपस में भाई-चारा स्थापित करने, कमजोर और गरीबों पर करुणा करने व जकात देने के नियम अक्षरशः बौद्धों के पंचशील व अस्टांगिक मार्ग में भी पाये जाते हैं। विनय पिटक में बौद्ध भिक्षुओं के लिए वर्णित आचार संहिता व हदीसों में वर्णित इस्लामी नियम जिनमें एक मोमिन को कैसे उठना-बैठना

चाहिए, किसी के घर कैसे जाना चाहिए, दूसरे से कैसे बात करनी चाहिए और अनुशासन के नियमों में पूरी सफलता मिलती है इस्लाम की नमाज व बौद्धों की पंचांग प्रणाम पूजा भी आपस में लगभग एक सी है। नमाज की नीभत खड़े होकर हाथों को नाभि तक रखकर की जाती है इसके बाद एक दो बार खड़े होने के अलावा बाकी सारी किया बौद्धों के पांचांग प्रमाण जैसी हैं जिस प्रकार नमाज के बाद दुआ पढ़ी जाती है उसी प्रकार बौद्ध भी प्रार्थना के बाद महामंगल सूत्र का पाठ करते हैं। बुद्ध वंदना और कलिमेय तइवा के शब्दों में समानता है। बुद्ध वन्दना का सीधा सा अर्थ है कि कोई पूज्य नहीं है सिवा अल्लाह के। नमाज के हय्य अस्सला व हय्या अललफला का अर्थ है संघं शरणं गच्छामि। बुद्ध व मुहम्मद साहब में पूरी समानता मिलती है। दोनों को मनुष्य के रूप में कम पद के रूप में ज्यादा प्रचारित किया गया है।

(16) मुसलमानों की तरह दलित भी सूफी, सन्तों व निर्गुण पन्थी सन्तों के निर्गुण निरंजन निर्विकारी सर्वशक्तिमान ईश्वर को मानते हैं, दशरथी पुत्र राम को नहीं।

(14) मुसलमानों से संबंधित शंकायें और उनका समाधान

(अ) मुसलमान विदेशी हैं–

सिर्फ तेरह मुसलमान भारत आए थे, इनमें से 9 वापस चले गए, सिर्फ चार रह गए। इस प्रकार भारत में सिर्फ इस्लाम बाहर से आया। वैदिक आर्य पचास हजार की संख्या में भारत आए थे जो आज भी इस देश के साथ विश्वासघात कर रहे हैं। मनु की व्यवस्था से मानवाधिकारों से वंचित, पीड़ित दुखित करोड़ों मूल भारतीयों ने सम्मान, समानता व सुरक्षा की खातिर इस्लाम कबूल किया। यह ऐतिहासिक तथ्य है। विवेकानन्द के अनुसार इस्लाम ने सिर्फ उन्हीं को शरण दी जिन्हें पुरोहित वर्ग ने उत्पीड़ित किया। यदि मुसलमान बाहर से आए होते तो वे भारत के प्रत्येक गाँव में समान रूप से अछूतों के आमने-सामने या साथ-साथ न बसे होते। आर्य अवश्य बाहर से आए क्योंकि उनकी उत्तर भारत में बहुलता है। इन्हीं करोड़ों भारतीय मुसलमानों के खिलाफ कुछ लोग नफरत का वातावरण बनाकर देश को गृह-युद्ध की आग में झोंकना चाहते हैं। इसलिए हमें देश की एकता, अखण्डता के लिए दलित मुस्लिम भाई द्वारा कायम करना चाहिए।

(ब) मुसलमान निर्दयी व निष्ठुर होते हैं

यदि बकरा या भैंसा काटने से मनुष्य निर्दयी बनता है तो जाति के आधार पर मनुष्यों (अछूतों) का नरसंहार, सती-प्रथा व दहेज प्रथा में औरतों को जिन्दा जलाकर

मार डालना क्या रहमदिली की निशानी है? आदमियों को मारना निर्दयता है या जानवरों को मारना? यज्ञ की बलिवेदी पर पुजारी स्वयं जानवरों को काटता था। मुसलमान ने आज तक जाति के आधार पर किसी अछूत की हत्या नहीं की, न उनकी औरतों का बलात्कार और न उनकी झुग्गी-झोंपड़ी जलाई। इन सभी कुकृत्यों को सवर्ण कर रहे हैं, दंगों में जो अछूत मारे जाते हैं—उनकी साजिश में सवर्णों का पूरा हाथ है। चींटियों को शक्कर खिलाना, मनुष्यों के प्रति नफरत फैलाना किस धर्म ग्रन्थ में लिखा है? लिखा है, मनुस्मृति में लिखा है कि कुत्ता, कौवा, कीड़ा, उल्लू, गोह, नीलकंठ आदि को मारकर शूद्र हत्या का प्रायश्चित्त करें। रामराज्य का असली अर्थ यही 4है।

(स) मुसलमान हर काम हिन्दुओं से उल्टा करते हैं

मुसलमान बहुत अच्छा कर रहे हैं। हिन्दुओं को भी वैसा ही करना चाहिए। मुसलमान अछूतों से छुआछूत का बर्ताव नहीं करते, वर्ण-व्यवस्था जाति-व्यवस्था नहीं मानते। हिन्दू अपनी बहुओं को जलाते हैं, मुसलमान नहीं, मुसलमान अपनी मस्जिदों में अछूतों व सभी को जाने देते हैं, परन्तु हिन्दू अपने ही भाई अछूतों को मन्दिर में प्रवेश नहीं करने देते। कुत्ते प्रवेश कर सकते हैं, अछूत नहीं। हिन्दू विधवा विवाह के बजाय उन्हें कोठे पर भेजना बेहतर समझते हैं। नरबलि जैसे जघन्य अपराध आज भी हिन्दुओं में हो रहे हैं। मुसलमान मुसलमान से घृणा नहीं करता परन्तु हिन्दू संस्कृति शूद्र, घृणा पर आधारित है। हिन्दुओं में खान-पान, उठन-बैठन, बोलचाल नामक सामाजिक समता के तत्त्वों का अभाव है जबकि मुसलमानों में ये सभी तत्त्व मौजूद हैं। ऐसे बीसियों तत्त्व हैं जिनको लिखकर हम पुस्तिका के कलेवर को बढ़ाना नहीं चाहते। भारत में सामाजिक समानता दलित, मुस्लिम, सिक्ख भाईचारा से ही स्थापित हो सकती है।

(क) हिन्दू गाय को माता समझकर पूजते हैं तथा मुसलमान उसे खाते हैं

यदि ऐसा होता तो बैल को भी पिता समझकर पूजा जाता। मनुस्मृति व अन्य ग्रन्थों में श्राद्ध में परोसने व यज्ञ के लिए 35 प्रकार के जानवरों के मांस का विधान है जिनमें भैंसा व गाय भी है। संकट नामक त्योहार में हिन्दू आज भी बेसन की गाय व तिलबुकरिवाँ बनाकर व उन्हें यज्ञ में भूनकर उनका एक-एक टुकड़ा अपने परिवार के सदस्यों को परोसते हैं। दिवाली में ऊँट-घोड़े, हाथी व बत्तख के आकार के शक्कर के खिलौने जो बाजार में बिकते हैं—वे सब वैदिक मांसाहार की यादगारें हैं। बौद्धों के प्राणी हिंसा विरोधी अभियान ने गाय को माता कहने पर मजबूर किया था। यदि गाय माता है तो भारत में सबसे ज्यादा दुर्दशा व उपेक्षा गाय की ही क्यों है? पूरे भारत में हड्डियों की ढांचा बनी ये माताएँ कूड़ा, कागज, मैला या सब्जी-फलों की दुकानों पर मुँह मारती फिर रही हैं। मैला खाने वाली गाय के दूध को गोरस

समझकर पिया जा रहा है परन्तु मैला न छूने वाले सफाई मजदूरों को गन्दा कहकर घृणा की जा रही हे। ऐसा क्यों?

(ख) भारत में रहकर पाकिस्तान के गीत गाते हैं

यह मानव स्वभाव है जो सभी मनुष्यों में समान है। जिस प्रकार पूरी दुनिया के ईसाई आपस में भाई-भाई हैं उसी प्रकार मुसलमान भी। परन्तु हिन्दू सात हजार अलग-अलग खानों में रहते हैं। जिस प्रकार कश्मीरी ब्राह्मणों को सर्दी लगने पर पूरी दुनिया के ब्राह्मणों को जुकाम हो जाता है उसी प्रकार अन्य धर्मावलंबियों को भी। डॉ. हरगोविन्द खुराना को हमने अपमानित करके भगया था। जब उन्होंने अमेरिकी नागरिकता लेकर नॉबल पुरस्कार प्राप्त किया तो हमने अपनी पीठ अपने हाथों से ठोंकी और डॉ. खुराना की तारीफ की। क्या ऐसा करके हमने अमेरिका के गीत गाये या अमेरिका परस्त सिद्ध हुए? यदि मॉरीशस या सूरीनाम का मैच लंका से हो तो हम मॉरीशस या सूरीनाम की जीत पर क्यों खुश होते हैं? क्या भातर के प्रति गद्दारी के कारण? हिन्दुओं (सवर्णों) ने अपना वेटीकन नेपाल की राजधानी काठमांडू बना रखा है। क्या यह राष्ट्र भक्ति के कारण? विश्व हिन्दू परिषद ने अपने कई सम्मेलन विदेशों में किए। भारत के अन्दर की बातों का विदेशों में समाधान खोजना क्या राष्ट्र-भक्ति का सूचक है? यदि विदेशी पैसे को भारत लाना गद्दारी है तो बोफोर्स दलाली जैसे पचासों आर्थिक घोटालों द्वारा विदेशी बैंकों की तिजोरी भरना क्या देशभक्ति है? जो स्वयं करो वह देशभक्ति, जो दूसरे करें वह गद्दारी, ऐसा क्यों? यदि मुसलमान गद्दार होते तो, मो. गोरी को भारत पर हमला करने का न्यौता देने वाला, झाँसी के किले का फाटक खोलने वाला, पाकिस्तान को गुप्त दस्तावेज बेचने वाला, बैंक घोटालों का मुखिया, बोफोर्स काण्ड का मुखिया गांधी का हत्यारा, दयानन्द सरस्वती को जहर देने वाला व मोहम्मद बिन क़ासिम की विजय हेतु मंदिर का झंडा झुकाने वाला मुसलमान अवश्य होता। इन सभी की जगह ब्रह्मा जी के मुख से पैदा हुए स्वयंभू देशभक्त थे।

(ग) जनसंख्या बढ़ाकर दूसरा पाकिस्तान बनाना चाहते हैं

एक-एक मुसलमान चार-चार औरतों से शादी करके इसलिए जनसंख्या बढ़ा रहा है ताकि भारत में दूसरा पाकिस्तान बनाया जा सके। यह सफेद झूठ चड्ढी सैनिक फैलाते हैं। बुद्धिजीवी तक इस मिथ्यावाद के शिकार हो जाते हैं। परन्तु यह बात किसी को नहीं मालूम कि आज मुस्लिम महिलाओं की तुलना में मुस्लिम पुरुषों की संख्या 25 लाख ज्यादा है। सन् 1961 की जनगणना के अनुसार एक से अधिक औरतों से शादी करने का प्रतिशत आदिवासियों में 15.25, हिन्दुओं में 5.8 तथा मुसलमानों में

5.7 है। यदि वियतनाम की तरह मर्द औरत का 40 : 60 अनुपात हो तो जनसंख्या बढ़ने की बात सही थी। जब आज के युग में एक पत्नी का ही भरण-पोषण दूभर है तो चार पत्नियों की बात कौन सोचेगा? इस्लाम में चार पत्नी रखने का हुक्म नहीं सिर्फ अनुमति है। लेकिन यदि चार पत्नियों की बात मान भी लें तब तो जनसंख्या बढ़ने के बजाय और घटेगी। जाहिर है जब चार औरतें चार मर्दों से शादी करेंगी तभी बच्चे अधिक पैदा होंगे। चार-चार औरतों से शादी करना परिवार नियोजन में मदद करना है। जनसंख्या वैज्ञानिकों का भी यह मत है कि हिन्दू और गैर-हिन्दुओं की समान रूप से जनसंख्या बढ़ी है। सन् 1981 की जनगणना के अनुसार मुसलमानों की जो लगभग एक प्रतिशत जनसंख्या बढ़ी है वह मीनाक्षीपुरम जैसे अछूतों के धर्मान्तरण के कारण। फिल्म अभिनेता दिलीप कुमार की दूसरी शादी का शोर मचाया जा रहा है, परन्तु धर्मेन्द्र द्वारा पहली पत्नी के जिन्दा रहते हुए दूसरी शादी करने का कोई प्रचार नहीं हुआ। लगता है सत्यम् वध की जगह सम्यम् वद् लिख गया है।

(घ) तलाक ठीक है या जला के मार डालना?

सवर्णों की महिलाओं से मुस्लिम महिलाओं के दस गुने अधिक अधिकार तथा सामाजिक सुरक्षा है। देवदासी प्रथा, बहुपतिवाद, सतीप्रथा, विधवा विवाह पर रोक, दहेज प्रथा तथा पुत्र-पुत्रियों में भेदभाव जैसी अमानवीय प्रथाएँ मुसलमानों व दलितों में नहीं पाई जातीं। सती प्रथा का समर्थन शंकराचार्य ने किया है। तलाक देना अच्छा है या जलाकर मार डालना? न मुसलमान मेरे रिश्तेदार हैं। और न सवर्ण मैं तो सत्य का उद्घाटन कर रहा हूँ।

(ङ) क्या इस्लाम तलवार के बल पर फैला?

पूरी दुनिया में कहीं भी इस्लाम तलवार के बल पर नहीं फैला। भारत में इस्लाम मनुवाद के बल पर फैला। यदि तलवार के बल पर फैला तो सवर्णों ने तहे दिल से मुसलमानों का साथ क्यों दिया? तलवार के धनी क्षत्रियों ने इस्लाम क्यों कबूल किया? मुगल बादशाहों से नाते-रिश्ते क्यों जोड़े? बाबर ने अपना राजनैतिक सलाहकार हमूशी नामक हिन्दू को क्यों बनाया? अकबर इलाहाबादी ने इसका व्यंग्यात्मक खण्डन करते हुए लिखा है कि–

इस्लाम को जो कहते हैं फैला बजोरे तेग।
यह भी कहेंगे फैली खुदाई बजोरे मौत॥

उल्टे वैदिक व सनातन धर्म बौद्धों और जैनों के भीषण नर संहार व उनकी शिक्षण संस्थाओं व पुस्तकालयों को जलाने के कारण फैला तथा आज दंगों के जरिए नरसंहार कराकर फैलाया जा रहा है।

(च) गुलामी के प्रमाणों को मिटाया जाना चाहिए

यदि ऐसा किया गया तो भारत मिट जाएगा, सिर्फ राख बचेगी। विदेशी हमलावर आर्यों ने 84 हजार बौद्ध मन्दिरों को तोड़कर उनकी जगह देव मन्दिर व चार धाम बनाए थे। यदि गुलामी के चिह्नों को मिटाने का नियम बना तो यह नियम देव मन्दिरों पर पहले लागू होना चाहिए। विदेशी हमलावर सिकन्दर के सभी यूनानी दवाखाने बन्द हो जाएँगे। विदेशी शक सम्राट कनिष्ठ का शक सम्वत् सुश्रुतव चरक संहिताएँ भी मिटानी पड़ेंगी। मुगलों द्वारा भारत को दी गई पोशाकें जैसे कमीज, शाल, चूड़ीदार अचकन, पायजामा, सलवार, मिठान्न जैसे—जलेबी, गुलाब जामुन तथा स्वयं हिन्दू राष्ट्र का शब्द 'हिन्दू' का सेवन बन्द करना पड़ेगा। पन्द्रह अगस्त को प्रधानमन्त्री झोपड़ी में खड़े होकर झंडा फहरायेंगे। पूरे देश में अंग्रेजों द्वारा बनाए गए एसेम्बली भवन, राज्य भवन, सर्किट हाउस, डाक बंगले, राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, कान्वेन्ट स्कूल, कॉलेज, मिशन अस्पताल, जी. टी. रोड, रेलवे लाइन आदि सबकी कार सेवा करनी पड़ेगी। परन्तु मनुवादियों का कहना है कि सिर्फ मस्जिदें ही गिराई जानी चाहिए। यहाँ भोजपुरी की एक कहावत चरितार्थ हो रही है कि 'कटहल का कोवा तू खइला त मोटका मोगरबा का होई?"

(छ) मुस्लिम तुष्टीकरण या सवर्ण तुष्टीकरण?

सवर्णों (15%) का तुष्टीकरण छुपाने के लिए मुस्लिम या हरिजन तुष्टीकरण का प्रचार किया जा रहा है। शिक्षा में 78%, राजनीति में 70%, व्यापार में 96%, भूमि में 94% तथा नौकरी में 88% सवर्णों का तुष्टीकरण है। देश के कुल रोजगार में 74% पर अकेले पंडित जी विराजमान हैं। इसमें आई. ए. एस., आई. पी. एस. व डी. एम. पर उनका क्रमशः 70, 63 व 57% का तुष्टीकरण है। देश के सात लाख मन्दिरों पर शत-प्रतिशत पंडित जी का जाति पर आधारित आरक्षण है। परन्तु कुल रोजगार के सिर्फ डेढ़ प्रतिशत पर मुसलमानों का तुष्टीकरण है।

(ज) मुसलमान दूसरों को मारने के लिए जिहाद छेड़ते हैं

यह एकदम दुर्भावना व मूर्खतापूर्ण प्रश्न है। जिहाद तब छेड़ा जाता है जब इस्लाम का भाईचारा, प्यार मोहब्बत, मानवता, शोषण का विरोध, गुलामी का विरोध जुल्म ज्यादतियों का विरोध व हिंसा के विरोध के विरुद्ध कोई गैर-मुस्लिम या मुस्लिम पूरे देश में आपत्तिकालीन स्थिति पैदा कर दे तब उसके खिलाफ जिहाद छेड़ने का प्रावधान है। यह युद्ध के मैदान में दुश्मन के खिलाफ रणभेरी मात्र है जिसका प्रत्येक देश हामी है। करबला के अलावा अभी तक कोई जिहाद नहीं छेड़ा गया। यदि

कोई देश भारत पर हमला करता है तो भारत का जवाबी हमला जिहाद है। इसे मुसलमानों से जोड़ना दुर्भावना का सूचक है।

(झ) मुसलमान हिन्दुओं को काफिर कहते हैं

काफिर का अर्थ है गैर-मुस्लिम। जिस प्रकार गैर-हिन्दू कहना कोई गाली नहीं है उसी प्रकार गैर-मुस्लिम या काफिर कहना गाली नहीं हो सकती है। जब हिन्दू अपने को गैर-मुस्लिम कहते हैं तो वे स्वयं अपने को काफिर कहते हैं। उल्टे मनुवादी अन्य धर्मावलंबियों को घृणा सूचक शब्द म्लेच्छ से सम्बोधित करते हैं तथा 65 करोड़ शूद्रों के विरोध में अपने लगभग प्रत्येक धर्मग्रन्थ में अपमानजनक, अस्पृश्यता, अमानवीयता, अन्याय व अत्याचार के काले कानून बना रखे हैं।

(ञ) आप मुसलमान हैं या भारतीय?

एकदम बेहूदा सवाल है। यह ऐसा ही सवाल है कि कोई आपसे पूछे कि आप आदमी हो या कानपुर के निवासी? मुसलमान मूल भारतीयों से धर्मान्तरित हैं। यदि मुसलमान भारतीय नहीं है तो क्या मध्य एशिया या ईरान से आए सवर्ण आर्य? मुसलमान होना व भारतीय होना एक ही बात है। जबकि हिन्दू होना व भारतीय होना एक ही बात नहीं है। यदि हिन्दुओं से कहो कि आप हिन्दू हैं या भारतीय या यह देश हिन्दोस्तान है या भारतवर्ष? तो वे हिन्दू या हिन्दोस्तान की हामी भरते हैं। जबकि हिन्दोस्तान का अर्थ भारतवर्ष नहीं होता। हिन्दोस्तान का अर्थ सवर्णस्थान होता है जो तंग दिमागी व तंगदिली का सूचक है।

संविधान के अनुसार भारत एक राष्ट्र नहीं बल्कि कई राष्ट्रीयताओं जैसे मुस्लिम राष्ट्र, ईसाई राष्ट्र, सिक्ख राष्ट्र, हिन्दू राष्ट्र, दलित राष्ट्र आदि का समूह है। एक राष्ट्र या कौम कई देशों में फैली हो सकती है और एक देश में कई राष्ट्रीयताएँ हो सकती हैं। मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध राष्ट्रीयताएँ पचासों देशों में फैली हैं। जबकि हिन्दू राष्ट्र सिर्फ 3.5 प्रतिशत ब्राह्मणों तक ही सीमित है। आरोप लगाया जाता है कि मुसलमान मक्का-मदीना से बहुत अधिक आस्था रखते हैं और हज द्वारा देश को भारी हानि पहुँचाते हैं जो राष्ट्र विरोधी हैं। जब हजारों हिन्दू रोजाना विदेशों से भारत तीर्थ यात्रा पर आते हैं तो क्या यह उन देशों के विरोध में नहीं है जहाँ के वे नागरिक हैं? जब हिन्दुओं के विदेशों में बसने पर भी उनकी राष्ट्रीयता नहीं बदल जाती तो भारत के मूल निवासी मुसलमानों, ईसाइयों, सिक्खों, जिन्होंने सैकड़ों वर्ष पूर्व राष्ट्रीयता प्राप्त की है, की राष्ट्रीयता कैसे बदल सकती है?

□□□

सिद्धार्थ बुक्स

प्रकाशक एंव वितरक
C-263 A, "चन्दन सदन"
हरदेवपुरी, शाहदरा,
दिल्ली –110093
फोन : 22810380, 9810173667

ISBN : 978-81-905689-8-2